

# Living the

# LOTUS

*Buddhism in Everyday Life*

12  
2016

VOL. 135

## FOUNDER'S ESSAY

### अनुमान दृष्टिकोण और मुक्ति दृष्टिकोण

किस कारण से लोग परेशान हैं, क्योंकि जब वे मानवीय गुणों से पूर्ण, सहानुभूति से पूर्ण एवं समानुभूति की भावना से जीना चाहते हैं, वे सब समझ नहीं पाते हैं कि कैसे किया जाय। जब कोई बच्चा स्कूल जाने से नकारना प्रारंभ करता है, उसके माता पिता को निराशा होती है और बच्चा स्कूल चला जाय, इसके लिए वे कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। फिर भी बच्चा स्कूल जाने से इनकार करता है।

मातापिता सहानुभूति रखने के बजाय, यह सोचकर विचार में डूब जाते हैं कि "क्यों नहीं बच्चा कम से कम स्कूल चला जाय?" लेकिन यद्यपि वे समालोचनात्मक दृष्टिकोण से अपने बच्चे को प्रताडित करते हैं, बच्चे के स्कूल जाने से इनकार में कोई बदलाव नहीं आता है। ऐसा इसलिए है कि माता पिता साधारण रूप से बच्चे की क्रिया को देखकर निर्णय लेते हैं। बच्चे के कार्यों के विषय तर्कसंगत

दृष्टिकोण रखें और उसे उसकी कमियों से मुक्त कराने की ओर ध्यान ले जायें।

बच्चे को उसकी परेशानियों से मुक्त कराने के लिए माता पिता बच्चे को उसी रूप में सहर्ष स्वीकार करें जैसा वह है और उसके स्कूल जाने की अनिच्छा को बदलने की कोशिश करने के पूर्व, उसे दोनों हाथों में लेकर गले से लगायें। बौद्ध धर्म की शिक्षा में है कि कोई भी घटना या वस्तु अकारण नहीं है। इसलिए मुझे आशा है कि बच्चे को विश्वास में लेकर माता पिता बच्चे की परेशानियों के कारण का पता लगा सकते हैं।

सर्वप्रथम, माता पिता घर को ऐसा रूप दें जहाँ बच्चे अपने को सुरक्षित अनुभव करें। यदि कदम कदम उनके सुरक्षित स्थान के दायरे का विस्तार होता है, वह दिन दूर नहीं जब वह स्वेच्छा से स्कूल जाएगा।

काइसोज्युइकान 8 (कोसेइ प्रकाशन कंपनी) से, पीपी 180-181

### Living the Lotus Vol. 135 (December 2016)

Published by Rishso Kosei-kai International,  
Fumonkan, 2-6-1 Wada,  
Suginami-ku, Tokyo, 166-8537 Japan  
TEL: +81-3-5341-1124  
FAX: +81-3-5341-1224  
Email: [shanzai.rk-international@kosei-kai.or.jp](mailto:shanzai.rk-international@kosei-kai.or.jp)  
Senior Editor: Shoko Mizutani  
Copy Editor: Parmita Shekhar  
Editorial Staff of RK International

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

## GUIDANCE BY PRESIDENT NIWANO

स्वर्ग की ओर देखो, ऐसा करने में कैसा शर्म

निचिको निवानो

प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ



### क्या आप के अंदर दोषी एक दोषी विवेक है?

वर्ष के अंत और नव वर्ष के प्रारंभ के आसपास की मौसमी छुट्टियों में, हममें से अनेक लोगों को अन्य लोगों के साथ इकत्र होने का बार-बार अवसर मिलता है। ऐसे अवसरों में, आम तौर पर कुछ नाश्ता पानी चलता है। जब मिठाईयाँ सामने आती हैं, जो सभी लोगों को प्रायः बहुत प्रिय है, परन्तु मिठाईयाँ कई आकार और आकृति में आती हैं। आप उनमें किसे उठाते हैं--एक बड़ा सा या एक छोटा सा? आपको लगता है कि बड़ावाला मीठा एवं बेहतर होगा, लेकिन मुझे लगता है कि ज्यादातर लोग अपेक्षाकृत छोटा को लेना पसन्द करेंगे, क्योंकि हम सब खुले तौर पर लालची जैसा व्यवहार करने में शर्म महसूस करते हैं।

हालांकि यह एक बहुत ही सरल उदाहरण है, परन्तु, बहुत पहले से, हम जापानी लोगों में ऐसी मानसिकता बन गयी है कि वैसा कुछ भी करने से बचते हैं जिससे कि लज्जित होना नहीं पड़े या एकोक्ति के रूप में 'शर्मसार होना है। 'मुझे पता है कि विद्यालय में "शर्म करना" छात्र अनुशासन का एक आदर्श वाक्य है। दूसरे शब्दों में, मानव शिक्षा की नींव में ऐसी जीवन शैली को अपनाना है जिसमें अंतरात्मा की आवाज शर्म से बेदाग है।

फिर भी, हम कभी कभी लाभ के प्रलोभन के आगे बेबस हो जाते हैं और हम कुछ ऐसा कर देते हैं कि हमें मनुष्य के नाते शर्मिन्दा होना पड़ता है। बेशक, हमारे बीच में कुछ लोग हैं, जिन्हें झूठ बोलने या गलत काम करने में कोई शर्म नहीं आती हैं।

हालांकि, बौद्ध धर्म के दस स्थानों में से परस्पर समाहित रहने के सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में "मैं" के साथ उसकी स्वार्थी इच्छाएँ और ईमानदारी और निष्ठा भी है। हम मनुष्य में एक साथ आत्म-केन्द्रित तथा शर्मनाक दिल, अर्थात् नरक एवं क्षुधित आत्माएँ का संसार तथा बुद्ध और बोधिसत्व का करुणामय दिल है, जो हमें दूसरों के उपकार में स्वयं को लगा देने का आनन्द देता है।

हिरोशी योशिनो (1926-2014) की कविता के एक अंश की याद दिलाता है: दिन के बाद दिन का आना / और दिन के बाद दिन का चला जाना / ये दो बातें हैं / क्या हम एक रूप में कर रहे हैं?"

कविता के दोनों भाव, "आना" और, "चला जाना" के लिए एक ही कांजी कैरेक्टर का उपयोग हुआ है। एक कैरेक्टर में दो शब्दों के अर्थ की परतें समाहित हैं जो दिखला रहा है कि हम जीवन में कभी असफल



रहे बिना नहीं रह सकते हैं। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि हम हमेशा चिंतन करें और स्वयं से पूछें "क्या आप की अंतरात्मा की आवाज दोषपूर्ण है ? और बुद्ध और बोधिसत्व के चित्त की ओर लौटें ।

## शर्म करना सुधार की ओर ले जाता है

जापानी के पवित्र भूमि बौद्ध धर्म के संस्थापक, होनेन (1133-1212) ने गंभीर आत्मचिन्तन के इन शब्दों के पीछे जिस भाव को छोड़ा है, वह है: "मुझे शर्म करनी चाहिए,, मुझे शर्म करनी चाहिए, मैं दुखी हूँ, मैं ग्लानि से पूर्ण हूँ ।"

जापान के जाने-माने प्राच्य दर्शन के विद्वानों में एक, मासाहिरो यासुओका (1898-1983) ने कहा है कि एक दृष्टि से, मनुष्य की मानवता कुछ बहुमूल्य और महान की खोज में दीखता है , जिससे मन में सम्मान का भाव निकलता है । इसके अतिरिक्त, श्री यासुओका के अनुसार, जब किसी में ऐसा मन, विकसित होता है, "उसकी स्वयं की अवास्तविकता के बारे में शर्म की भावना के विकास का प्रारंभ हो जाता है ।" एक धार्मिक दृष्टिकोण से, जैसे जैसे विश्वास अधिक से अधिक गहरा होता जाता है, आप अपने ऊपर कड़ी दृष्टि रखते हैं और आप अपनी त्रुटियों पर विचार करने तथा पश्चाताप करने से वंचित नहीं रह सकते हैं । दरअसलमें, यासुओका के ये शब्द एक विधान है ।

जब देवताओं और बुद्धों को देखते हैं और उनकी पूजार्चना करते हैं या जब आप उनके सन्मुख होते हैं, आप अफसोस के साथ सोचते हैं कि " मैं अभी योग्य नहीं हूँ ।" "परन्तु, जैसाकि शाक्यमुनि बुद्ध ने कहा है," शर्म की भावना से संपन्न मन व्यक्ति के धारण करने वाले किसी वस्त्र से बढ़कर शुद्ध और सुन्दर अलंकरण है ।" इसलिए शर्म की भावना इतनी गतिशील शक्ति है कि मनुष्य के रूप में हमारे विकास में प्रेरक बन सकती है । प्राचीन चीनी दार्शनिक मंगसियस् (372-289 ईसा पूर्व) ने कहा था, "स्वर्ग की ओर देखो, ऐसा करने में कोई शर्म करने की बात नहीं है ।" यह एक जीवन शैली है जो अति मानवीय है और यह महानता के अति निकट पहुँचने का माध्यम है ।

बेशक, यह जीवन की विशिष्ट शैली नहीं है । महत्वपूर्ण बात यह है कि वैसा जीवन यापन करना है जिसको देवताओं और बुद्धों के, दूसरे लोगों के, अपने आप के, सामने ईमानदारी से सदा समान रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं । दूसरे शब्दों में, लोगों के प्रति विनम्र होना कभी नहीं भूलें, खुशी से करें जो आपसे उम्मीद है । और फिर, अगर आप हमेशा दूसरे लोगों का ध्यान रखते हैं, तो आपका दिन दोषमुक्त विवेकशील वातावरण में बीतेगा ।

फिर भी, यदि आपको लग रहा है कि आप मार्ग में कहीं खो गये हैं तो प्रयास करें याद करने का कि अन्य लोगों की भावनाओं को प्रथम स्थान देना कितना महत्वपूर्ण है । जब आप दूसरों की मदद करने के लिए एक गंभीर प्रयास कर रहे हैं, आप खुद के स्वार्थ को आगे बढ़ाने की बात नहीं करेंगी। शायद हम मानव जाति ने आत्मनिष्ठ बातों पर सोचते विचारते तथा दूसरों के हित की चिन्ता करते शनैः शनैः विकास किया है ।

From Kosei, December 2016.



# Child Care lifeline

मैं बेटी को लेकर चिंतित हूँ जो स्कूल में समस्याएँ पैदा कर रही है

**Q** प्रश्न: मैं प्रायः इस तरह की शिकायतें सुनती हूँ कि "आपकी बेटी ने मेरे बेटे को मारा है और उसे चोट लगी है" और "आपकी बेटी ने मेरे बच्चे के नोटबुक में कुछ कुछ लिख दी है।" मैं नहीं जानती हूँ कि मुझे कितनी बार क्षमायाचना मांगनी पड़ी है। जब मैं उसे कहती हूँ कि अपने सहपठियों से उग्र बर्ताव नहीं करो, तो वह जवाब देती है कि मैं उनके लिए समस्याएँ उत्पन्न नहीं कर रही हूँ। हम सब अच्छे मित्र हैं और उसने ध्यान नहीं दिया कि मुझे क्या कहना है। उसके दो बड़े भाई हैं, इसलिए उसका व्यवहार लड़कों जैसा है। दूसरी ओर वह सुकोमल हृदय की लड़की है जिसको जानवरों एवं पेड़ पौधों से गहरा लगाव है। क्या यह बेहतर होगा कि वर्तमान स्थिति को यथावत छोड़ दें?

**A** उत्तर: मैं समझता हूँ कि आपकी बेटी को जानवरों एवं पेड़ पौधों से गहरा लगाव है और वह खुले वातावरण में पली बड़ी है। प्राथमिक विद्यालय की तीसरी कक्षा में पहुँचते पहुँचते, बच्चों के मन में अक्सर एक बड़ा परिवर्तन आता है।

उस समय के पूर्व वह अपने व्यक्तिपरक दृष्टिकोण से संसार की सभी वस्तुओं को अपने इर्दगिर्द घूमते देखती है। लेकिन अब वह खुद अपने इर्दगिर्द की वस्तुओं की ओर आकर्षित है। अब यह महत्त्वपूर्ण समय है जब उसमें 'क्या अच्छा है या क्या खराब है' में विभेद करने की समझ आ जाती है।

ऐसा कहा जाता है कि यह समय है जब बच्चे आगे का सोचने लगते हैं। बच्चे इस चरण में अति सक्रिय एवं उद्विग्न होते हैं और सहज ही विचलित हो जाते हैं। उनका कथन अतिरंजित और मूखर होता है। आपकी बेटी के दो बड़े भाई हैं, शायद इसलिए उसका वर्तमान कुछ उग्र है।

हालांकि, किसी के नोटबुक में लिख देना अच्छा नहीं है, इसलिए अच्छा होगा आप सहजभाव से समझने के लहजे में कहें कि "तुझे कैसा लगेगा यदि कोई तुम्हारी किसी विशेष लगने वाली वस्तु को खण्डित कर दे? यदि तुम किसी चीज को पसन्द नहीं करते हो, दूसरों को भी वैसी चीजें नापसन्द होंगी। इसलिए वैसा कार्य नहीं करो, जिसको दूसरे नापसन्द करते हैं।"

बच्चा जिसे आपकी बच्ची ने मारा और चोट पहुँचाया है, यह अच्छा होगा कि आप दोनों को एक साथ लायें और माफी की पेशकश करें। जब वह देखेगी कि उसकी माँ माफी माँगती है, वह भी

माफी माँगना सीखेगी और वैसे कार्य के करने से बचेगी जिससे कि माँ को दुःखित देखने का मौका नहीं आये।

इसके अतिरिक्त, कुछ कारण है जिससे वह अकेलापन महसूस करती है?

यद्यपि माता पिता सोचते हैं कि वे बच्चों के समान व्यवहार करते हैं परन्तु अनजाने में ही अपने तीसरे बच्चे से अधिक सहनशीलता की आशा करते हैं। आपके लिए सुन्दर अवसर है कि आप अपने ऊपर सोच विचार करें और अपने बच्चे के दिल दिमाग को अपनायें और सोचें कि भाईयों के साथ उसका कैसा चल रहा है, उसका स्कूल में कैसा चल रहा है, और आप माँ के रूप में क्या कर रही हैं। जब आप अपने ऊपर पुनः ध्यान केंद्रित करेंगी, आपके दिल दिमाग से आपकी बेटी अवगत हो जायेगी और उसके हृदय की अन्तर्निहित कोमलता प्रस्फुटित होगी।



**Point** यह अपने बच्चे को गले लगाने का बड़ा अवसर है।

प्रश्न यह है कि एक माँ अपनी बेटी के कार्यों और व्यवहार को खुद में प्रतिबिंबित करने का प्रयास करे। एक माता पिता के लिए उत्तम है कि बच्चे के साथ अपने दैनिक बातचीत पर पुनर्विचार करते रहें और बच्चे के दिल और दिमाग को अपनायें।

(टोक्यो अनुसंधान संस्थान की परिवार शिक्षा द्वारा प्रदत्त उत्तर)

The Tokyo Research Institute for Family Education इस आधार पर काम करता है कि "यदि माता पिता बदल सकते हैं तो बच्चों में भी परिवर्तन आयेगा।" हम विभिन्न स्थानों में प्रेजेंटेशन देते हैं और संबन्धित माता पिता को अपनी सलाह देते हैं। "Family education from their children" कार्यक्रम में हमारी मदद से अनेक हँसते खेलते परिवार निकल आये।

## कोई खुद अकेले नहीं रह सकता है

बुद्ध की देशना है कि किसी में “स्व की सत्ता नहीं है ( शोहो- मुगा),” जिसका अर्थ है कि “विश्व की समस्त वस्तुयें, बिना अपवाद के, परस्पर संबद्ध हैं। कोई नहीं है जिसकी स्वतंत्र सत्ता है, अर्थात् जो पूर्णतः दूसरों से असंबद्ध है” (Nikkyo Niwano Buddhism for Today, Tokyo: Kosei Publishing Co., 1976, p. 30)।

हम अपने अस्तित्व के संबन्ध विचार करें: जल, वायु, सूर्य, पौधों, और कई अन्य बातों के सहारे हमारा जीवन चल रहा है; हम सबके आभारी हैं। कोई भी नवजात से वयस्क एकाएक नहीं हो जाता है। जिस समय हम जन्म लेते हैं, उस समय से जबतक हम अपने पैरों पर खड़े होने में समर्थ नहीं हो जाते हैं, कितने लोगों ने हमारे पालन पोषण में सहयोग किया है, संरक्षण दिया है ?

आपकी बेटी प्राथमिक विद्यालय के तीसरे ग्रेड में है और उसकी व्यक्तिपरक सोच बदलकर अपनी बाहरी दुनिया के इर्द गिर्द चली गयी है। यह उसके लिए बड़ा अच्छा मौका है।

यह आपकी बेटी के लिए जीवन के बारे में कुछ कुछ जानने और दुनिया का अनुभव लेने का समय है। यह महत्वपूर्ण है कि आप सुनिश्चित करें कि आपकी बेटी को दैनिक जीवन से जुड़ी वस्तुओं के परस्पर संबन्ध का एहसास होना चाहिए। उदाहरण के लिए, खाने के समय, अपनी बेटी को बतायें कि हमारे सामने जो भोजन परोसा हुआ है उसको तैयार करने में कितने सारे लोग लगे थे।

यह माँ और बेटी के लिए एक साथ जानने का बहुमूल्य अवसर है कि किसी का कार्य उससे संबन्धित व्यक्तियों को प्रभावित करता है। क्यों नहीं आप दैनिक जीवन में इस परस्पर संबंध की खोज करती है और साथ मिलकर बेटी के विचारों को संपोषित करती है ?

(धर्म शिक्षा और मानव संसाधन विकास, रिश्तो कोसेइ काई विभाग द्वारा संपादकीय पर्यवेक्षण)



Please give us your comments!



We welcome comments on our e-newsletter Living the Lotus.

Please send us your comments to the following e-mail address.

E-mail: [living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp](mailto:living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp)

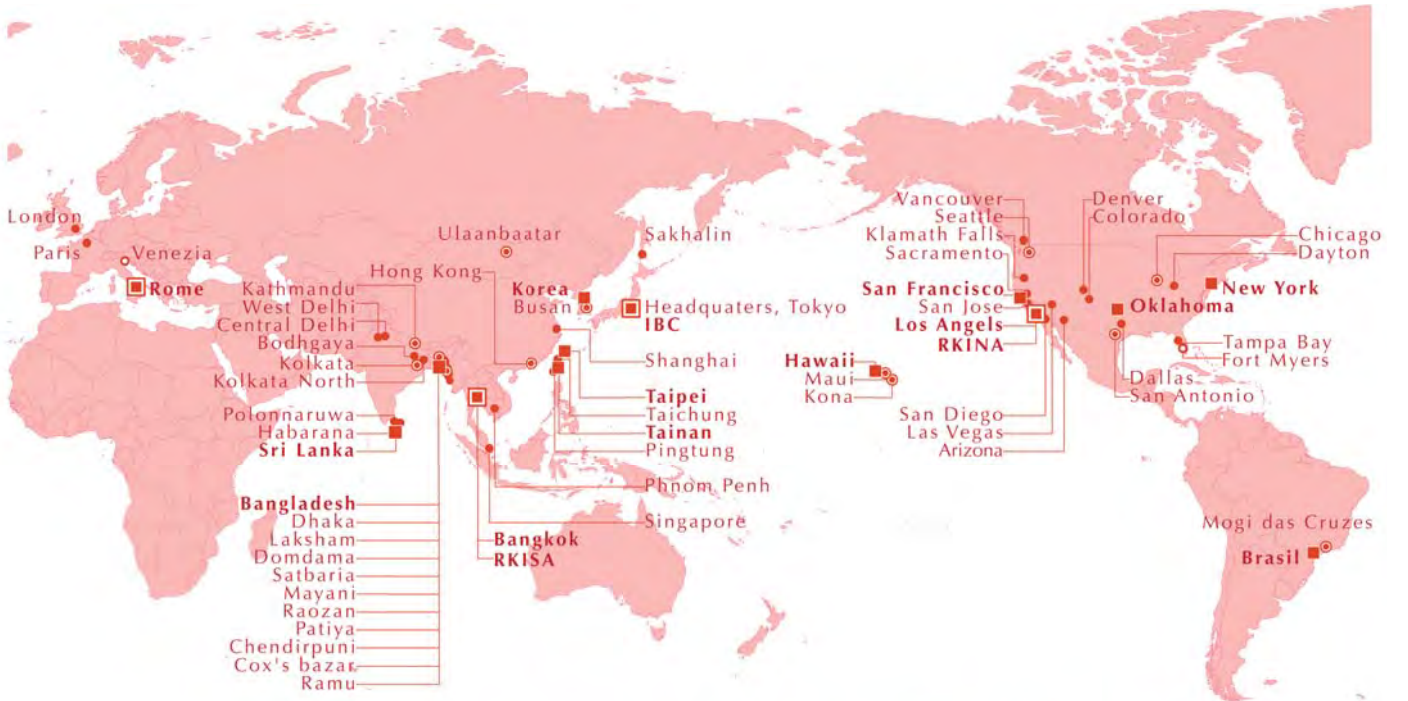
## बोधगया में धर्म प्रदीप

दिसम्बर, 8 को शाक्यमुनि के ज्ञान के साक्षात्कार का वार्षिकोत्सव है। शाक्यमुनि बुद्ध ने भारत के बोधगया में 2500 वर्ष पूर्व बुद्धत्व प्राप्त किया था। बोधगया का एक युवक अनेकों वर्ष पूर्व रिश्शो कोसेइ काइ का सदस्य बना था और अब वहाँ के 60 से ऊपर परिवार के सदस्यगण रिश्शो कोसेइ काइ से जुड़ गये हैं।

वहाँ के संघ का प्रधान श्री जितेन्द्र, बोधगया संघ का प्रथम व्यक्ति है जिसे महापवित्र हॉल में कई सप्ताह पूर्व धर्म शिक्षक की उपाधि प्रदान की गयी है। इस बीच में, बौद्ध धर्म की शिक्षा से अति प्रसन्न एक सदस्य ने एक भूमि खण्ड संघ को दान में दिया और बोधगया के सभी सदस्यों को खुद से प्रार्थना हॉल के निर्माण के लिए उत्साहित किया है।

बुद्ध की घर्म देशना भारत से चीन होकर जापान में प्रसारित हुआ और बुद्ध के ज्ञान की प्राप्ति के 2500 वर्षों के उपरान्त, बुद्ध के ज्ञान की पुण्य भूमि में धर्म प्रदीप जलाया है। मैं बहुत कृतज्ञ हूँ कि घर्म देशना का बोधगया में आनन्द फैल रहा है।

रिश्शो कोसेइ काइ अन्तरराष्ट्रीय विभाग निर्देशक  
शोको मिजुतानी



 RISSHO KOSEI-KAI INTERNATIONAL BRANCHES 

# Rissho Kosei-kai Overseas Dharma Centers

# 2016

## Rissho Kosei-kai International

5F Fumon Hall, 2-6-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan  
Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224

## Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First Street Suite #1 Los Angeles  
CA 90033 U.S.A

Tel: 1-323-262-4430 Fax: 1-323-262-4437  
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

### Branch under RKINA

#### Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, U.S.A.  
Tel: 1-253-945-0024 Fax: 1-253-945-0261  
e-mail: rkseattle@juno.com  
http://www.buddhistLearningCenter.com

#### Rissho Kosei-kai of Vancouver

#### Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.  
Tel: 1-210-561-7991 Fax: 1-210-696-7745  
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com  
http://www.rkina.org/sanantonio.html

#### Rissho Kosei-kai of Tampa Bay

2470 Nursery Rd. Clearwater, FL 33764, USA  
Tel: (727) 560-2927  
e-mail: rktampabay@yahoo.com  
http://www.buddhismtampabay.org/

## Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.

Tel: 1-808-455-3212 Fax: 1-808-455-4633  
e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

#### Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.  
Tel: 1-808-242-6175 Fax: 1-808-244-4625

#### Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalaho Highway, Kailua-Kona, HI 96740, U.S.A.  
Tel: 1-808-325-0015 Fax: 1-808-333-5537

## Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.

Tel: 1-323-269-4741 Fax: 1-323-269-4567  
e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

#### Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona

#### Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado

#### Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego

#### Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas

#### Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

## Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.

Tel: 1-650-359-6951 Fax: 1-650-359-6437  
e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

#### Rissho Kosei-kai of Sacramento

#### Rissho Kosei-kai of San Jose

## Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016, U.S.A.

Tel: 1-212-867-5677 Fax: 1-212-697-6499  
e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

#### Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, U.S.A.

Tel: 1-773-842-5654  
e-mail: murakami4838@aol.com  
http://home.earthlink.net/~rkchi/

#### Rissho Kosei-kai of Fort Myers

http://www.rkftmyersbuddhism.org/

## Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112, U.S.A.

Tel & Fax: 1-405-943-5030  
e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

#### Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Klamath Falls

1660 Portland St. Klamath Falls, OR 97601, U.S.A.

#### Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver

1571 Race Street, Denver, Colorado 80206, U.S.A.  
Tel: 1-303-810-3638

#### Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

635 Kling Dr, Dayton, OH 45419, U.S.A.  
http://www.rkina-dayton.com/

## Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,

CEP 04116-060, Brasil  
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

Fax: 55-11-5549-4304  
e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

#### Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,  
CEP 08730-000, Brasil  
Tel: 55-11-5549-4446/55-11-5573-8377

## Rissho Kosei-kai of Taipei

4F, No. 10 Hengyang Road, Jhongjheng District, Taipei City 100, Taiwan

Tel: 886-2-2381-1632 Fax: 886-2-2331-3433  
http://kosei-kai.blogspot.com/

#### Rissho Kosei-kai of Taichung

No. 19, Lane 260, Dongying 15th St., East Dist.,

Taichung City 401, Taiwan  
Tel: 886-4-2215-4832/886-4-2215-4937 Fax: 886-4-2215-0647

## Rissho Kosei-kai of Tainan

No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan

Tel: 886-6-289-1478 Fax: 886-6-289-1488

#### Rissho Kosei-kai of Pingtung

## Korean Rissho Kosei-kai

6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea

Tel: 82-2-796-5571 Fax: 82-2-796-1696  
e-mail: krkk1125@hotmail.com

#### Korean Rissho Kosei-kai of Busan

3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea  
Tel: 82-51-643-5571 Fax: 82-51-643-5572

## Branches under the Headquarters

#### Rissho Kosei-kai of Hong Kong

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,  
North Point, Hong Kong,

Special Administrative Region of the People's Republic of China  
*Tel & Fax:* 852-2-369-1836

**Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar**

15f Express tower, Enkh taiwnii urgun chuluu, 1st khoroo, Chingeltei district, Ulaanbaatar, Mongolia  
*Tel:* 976-70006960  
*e-mail:* rkkmongolia@yahoo.co.jp

**Rissho Kosei-kai of Sakhalin**

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk  
693005, Russian Federation  
*Tel & Fax:* 7-4242-77-05-14

**Rissho Kosei-kai di Roma**

Via Torino, 29-00184 Roma, Italia  
*Tel & Fax :* 39-06-48913949  
*e-mail:* roma@rk-euro.org

**Rissho Kosei-kai of the UK**

**Rissho Kosei-kai of Venezia**

Castello-2229 30122-Venezia Ve Italy

**Rissho Kosei-kai of Paris**

86 AV Jean Jaures 93500 Tentin Paris, France

**International Buddhist Congregation (IBC)**

5F Fumon Hall, 2-6-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan  
*Tel:* 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224  
*e-mail:* ibcrk@kosei-kai.or.jp <http://www.ibt-rk.org/>

**Rissho Kosei-kai of South Asia Division**

5F Fumon Hall, 2-6-1 Wada, Suginami, Tokyo, 166-8537, Japan  
*Tel:* 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224

**Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)**

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkok, Huaykhwang Bangkok 10310, Thailand  
*Tel:* 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218  
*e-mail:* thairissho@csloxinfo.com

**Branches under the South Asia Division**

**Rissho Kosei-kai of Central Delhi**

224 Site No.1, Shankar Road, New Rajinder Nagar, New Delhi, 110060, India

**Rissho Kosei-kai of West Delhi**

66D, Sector-6, DDA-Flats, Dwarka  
New Delhi 110075, India

**Rissho Kosei-kai of Kolkata**

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar,  
Kolkata 700094, India

**Rissho Kosei-kai of Kolkata North**

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,  
West Bengal, India

**Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center**

Ambedkar Nagar, West Police Line Road  
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

**Rissho Kosei-kai of Kathmandu**

Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,  
Kathmandu, Nepal

**Rissho Kosei-kai of Singapore**

**Rissho Kosei-kai of Phnom Penh**

#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,  
Phnom Penh, Cambodia

**Thai Rissho Friendship Foundation**

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkok, Huaykhwang Bangkok 10310, Thailand  
*Tel:* 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218  
*e-mail:* info.thairissho@gmail.com

**Rissho Kosei-kai of Bangladesh**

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh  
*Tel & Fax:* 880-31-626575

**Rissho Kosei-kai of Dhaka**

House#408/8, Road#07(West), D.O.H.S Baridhara,  
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh  
*Tel:* 880-2-8413855

**Rissho Kosei-kai of Mayani**

Maitree Sangha, Mayani Bazar, Mayani Barua Para, Mirsarai,  
Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Patiya**

Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Domdama**

Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar**

Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Satbaria**

Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Laksham**

Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,  
Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Raozan**

West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Chendirpuni**

Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Ramu**

**Rissho Kosei-kai Dhamma Foundation, Sri Lanka**

382/17, N.A.S. Silva Mawatha, Pepiliyana, Boralessgamuwa, Sri Lanka  
*Tel & Fax:* 94-11-2826367

**Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa**

**Rissho Kosei-kai of Habarana**

151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

**Other Groups**

**Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai**